कथा श्रवण

भक्ति-साधना का मुख्य साधन

साधना के अनेक मार्ग हैं, परंतु जो मार्ग सबसे सरल, सहज और हृदयस्पर्शी है- वह है श्रवण-भक्ति। भक्ति के दो प्रमुख स्तंभ माने गए हैं- भजन और श्रवण। भजन आत्मा का गीत है और श्रवण उस गीत की प्रतिध्वनि। भजन में हृदय बोलता है और श्रवण में हृदय सुनता है। भजन करने के भी कई विधान हैं। यदि आपने गुरु धारण किया है, तो हरेक गुरु अपने शिष्य को भजन करने का भिन्न-भिन्न तरीका बताता है। यह तो सर्वविदित है कि भजन केवल भगवान के लिए ही किया जाता है। भगवत प्राप्ति अथवा मोक्ष, भजन का लक्ष्य होता है। भजन करने वाला जीव यह समझ ले कि भजन केवल भगवान के लिए ही किया जाना है। भजन, केवल भक्त के हृदय में बैठे भगवान के लिए ही होना चाहिए। भजन की उच्चतम स्थिति है, भगवान का वियोग, जो भक्त प्रभु का वियोग एक पल भी न सह सके- वही सही भजन करने का उत्तराधिकारी है।

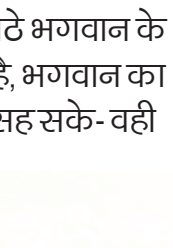

अशोक सूरी
आध्यात्मिक लेखक

भक्ति अथवा साधना का मुख्य साधन है- कथा श्रवण। कथाओं में सर्वोत्तम कथा श्रीमद्भागवत बताई गई है। श्रीमद्भागवत परम संहिता है इसे पंचम वेद की संज्ञा दी जाती है। यह परमहंसो का धन है। प्रभु की कथा सुनने से भक्त की सूक्ष्म दृष्टि प्रभु में लग जाती है। सांसारिक दृष्टि से उसकी मृत्यु हो जाती है। भागवत-कथा अमृत है, जिसे पूर्णरूपेण पीना पड़ता है। कथा श्रवण भौतिक अमृत है, इसका भी लाभ मिलता है, परंतु कथा श्रवण का पूर्ण लाभ कथा को अपने हृदय में धारण करने से प्राप्त होता है। भोजन की तरह कथा को भी पचाना पड़ता है। जिस प्रकार भोजन पचने के उपरांत शरीर को लाभ देता है, उसी प्रकार जब कथा श्रवण के उपरांत हृदय में पच जाती है, तभी उसका प्रतिफल प्राप्त होता है।

भागवत कथा श्रवण करने से जीव के जन्म-जन्म के पाप का हरण होता है एवं मंगल को प्राप्त होता है। आजकल नगरों में और मंदिरों में भागवत कथा के आयोजन की प्रथा बहुतायत में हो रही है। इस आयोजन को हम आयोजक अथवा यजमान द्वारा किया गया कथा का दान भी कह सकते है। कथा का दान भी परम कल्याणकारी है। कथा का आयोजन यज्ञ के समान पुण्यदायक है। यद्यपि यह दान समर्थ और योग्य व्यक्ति ही कर सकते हैं। कथा आयोजन से हजारों भक्तों को कथा श्रवण का लाभ मिलता है, जिसका पुण्य लाभ कथा आयोजक के हिस्से में भी निश्चित रूप से आता है। निष्काम भाव से किया गया भागवत कथा आयोजन राजसूर्य यज्ञ के पुण्य लाभ के बराबर होता है। कथा के आयोजन से भक्त अपने साथ-साथ अपने पूर्वजों का भी उद्धार कर लेता है। कृति के द्वारा कर्ता तो रहता है, परंतु कर्म से व्यक्ति अमर हो जाता है।

रामकथा, भागवत, भक्तमाल आदि कथाओं में शास्त्रों में सब कुछ लिखा है, लेकिन हृदय में समाविष्ट नहीं होता है। अंदर बढ़ता है, श्रवण से। जब किसी महापुरुष अथवा संत द्वारा उसकी अनुभूति से युक्त शब्दों द्वारा कथा का वाचन एवं श्रोताओं द्वारा श्रवण होता है तभी कथासार अंदर बैठता है। जैसे हमें शिक्षा प्राप्ति के समय हमारे गुरुजन बोलकर पढ़ाते हैं और विद्यार्थी श्रवण करके ही विद्या प्राप्त करते हैं। बिना श्रवण किए विद्या प्राप्त नहीं हो सकती है और जैसे शृंगाली स्वयं पहले खाकर आती है और फिर चबाकर अपने बच्चों के मुख में डाल देती है, तो वह बच्चों को हजम हो जाता है। ठीक उसी प्रकार संत सद्गुरु पहले ग्रंथों को आत्मसात करते हैं और तदुपरांत औरों को श्रवण कराते है। परंतु केवल सुनने मात्र से ही कथा से आत्म साक्षात्कार नहीं होता अपितु कथा को मनन करने एवं हृदय में धारण करने से होता है, लेकिन प्रथम होता, तो श्रवण ही है। श्रवण भक्ति नवधाभक्ति की एक मुख्य विधा है। श्रोता को कथा प्राप्ति के लिए प्रथम अधिकारी बनना पड़ता है और यह होता है, सत्य और संत कृपा से।

बोध कथा

सफलता का रहस्य

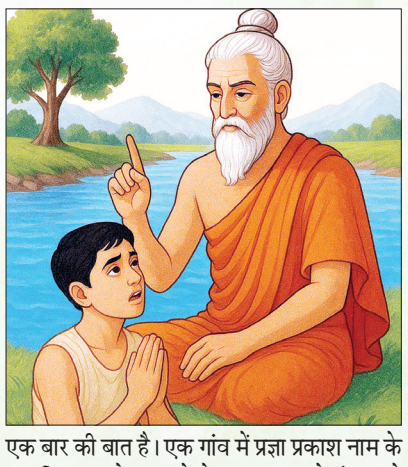

एक बार की बात है। एक गांव में प्रज्ञा प्रकाश नाम के एक विद्वान महोदय रहते थे। धन-धान्य से संपन्न तो थे ही, लेकिन ज्ञान उनके पास इतना था कि दूर-दूर से लोग अपनी समस्याओं का समाधान करने उनके पास आते थे। अपने अनुभव और ज्ञान से प्रज्ञा प्रकाश लोगों की समस्याओं का समाधान करते थे। इसलिए सभी उनको गुरुजी कहकर संबोधित करते थे।

एक दिन की बात है। एक नवयुवक गुरुजी के पास आया और बोला- "गुरुजी मुझे सफलता का रहस्य बताइए, मैं चाहता हूं कि मैं भी आपकी तरह विद्वान बनकर अपनी गरीबी दूर कर सकूं।" गुरुजी मुस्कुराएं और उन्होंने उसे दुसरे दिन प्रातःकाल नदी किनारे मिलने के लिए बुलाया। युवक को भी नहाना था इसलिए वह भी अपने वस्त्र लेकर दुसरे दिन प्रातः काल नदी किनारे पहुंच गया। गुरुजी उस युवक को नदी के गहरे पानी में ले गए, जहां पानी गले के ऊपर निकल गया तो उन्होंने उसे डुबो दिया। थोड़ी देर युवक छटपटाया फिर उन्होंने उसे छोड़ दिया। युवक हांफता-हांफता नदी से बाहर भागा। जब उसे सुध आई तो बोला- "आप मुझे मारना क्यों चाहते है?" गुरुजी बोले- "नहीं भाई, मैं तो तुम्हे सफलता का रहस्य बता रहा था। अच्छा बताओ? जब मैंने तुम्हारी गर्दन पानी में डुबो दी थी, उस समय तुम्हें सबसे ज्यादा इच्छा किस चीज की हो रही थी?" युवक बोला- "सांस लेने की।" गुरुजी बोले- "बस यही सफलता का रहस्य है। जब तुम्हें सफलता के लिए ऐसी ही उत्कंठ इच्छा होगी, तब तुम्हें सफलता मिल जाएगी। इसके अलावा और कोई रहस्य नही है।" शिक्षा- दोस्तों! आप जीवन में किसी भी चीज को पाना चाहते हो, तो उसे आपका बेइंतहा चाहना जरूरी है। मतलब हर समय आपको उसे पाने के बारे में सोचना चाहिए। अगर ऐसा नहीं है, तो शायद आप उसे देर से पाओ या शायद न भी पाओ।

-ज्ञानेश तिवारी

पौराणिक कथा

सत्य का प्रकाश

राजा हरिश्चंद्र वे अपने सत्य, न्याय और वचनपालन के लिए पूरे आर्यावर्त में प्रसिद्ध थे। उनके राज्य में कोई दुखी नहीं था, सब सुख और शांति से जीवन व्यतीत करते थे। एक दिन महर्षि विश्वामित्र ने उनकी परीक्षा लेने का निश्चय किया। उन्होंने राजा के पास जाकर कहा- "हे राजन, तुमने एक यज्ञ के समय मुझे दान देने का वचन दिया था। अब मैं वही दान लेने आया हूं।" राजा ने विनम्रता से कहा, "ऋषिवर, आप जो चाहें, मैं देने को तत्पर हूं।" विश्वामित्र ने कहा- "मुझे अपना सारा राज्य चाहिए।" हरिश्चंद्र ने बिना विलंब किए कहा- "ऋषिवर, राज्य आपका है।" उन्होंने अपना सिंहासन त्याग दिया और अपनी पत्नी तारामती तथा पुत्र रोहिताश्व के साथ वन की ओर चल पड़े। विश्वामित्र ने कहा- "राज्य तो मेरा हुआ, पर यज्ञ की दक्षिणा अभी बाकी है।" राजा ने कहा, "मेरे पास कुछ नहीं बचा, पर मैं वचन नहीं तोड़ूंगा। मैं श्रम करके दक्षिणा दूंगा।" उन्होंने बनारस जाकर एक शवदाह गृह में काम करना शुरू किया, जहां मृत शरीरों की चिता जलाने का कार्य करते थे। राजा हरिश्चंद्र की पत्नी तारामती वहीं कपड़े धोने का काम करती थीं और पुत्र रोहिताश्व लकड़ियां बटोरता था।

एक दिन भाग्य ने और भी कठोर परीक्षा ली, उनका पुत्र सर्पदंश से मर गया। तारामती उसका शव लेकर श्मशान पहुंची, पर हरिश्चंद्र अपने कर्तव्य से बंधे थे। उन्होंने कहा, "मुझे नियमों के अनुसार शवदाह शुल्क देना होगा।" तारामती रो पड़ी- "मैं तुम्हारी पत्नी हूं, यह तुम्हारा पुत्र है।" राजा ने गंभीर स्वर में कहा- "यहां मैं राजा नहीं, केवल दास हूं। मुझे अपना धर्म निभाना होगा।"

तभी आकाशवाणी हुई- "राजन, तुम्हारी परीक्षा पूरी हुई। तुमने सत्य और धर्म की रक्षा के लिए जो कष्ट सहे, वह संसार के लिए उदाहरण हैं।" देवता प्रकट हुए, पुत्र जीवित हो गया और हरिश्चंद्र को पुनः उनका राज्य मिला।

-फीचर डेस्क

सप्ताह के प्रमुख व्रत

कालभैरव जयंती- 12 नवंबर

भगवान कालभैरव को भगवान शिव का उग्र स्वरूप माना जाता है। धर्मग्रंथों में भगवान कालभैरव को समय एवं मृत्यु के स्वामी के रूप में वर्णित किया गया है। भैरव का शाब्दिक अर्थ 'भय को नष्ट करने वाला' होता है। तंत्र मार्ग में भैरव तंत्र उपासना का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। भूत, प्रेत, पिशाच आदि रक्षा तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्ति हेतु भगवान कालभैरव का पूजन किया जाता है, जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक भगवान कालभैरव की उपासना करता है उसके वह निर्भीक हो जाता है तथा उसके मन में व्याप्त समस्त ज्ञात-अज्ञात भय नष्ट हो जाते हैं।

उत्पन्ना एकादशी- 16 नवंबर

उत्पन्ना एकादशी का व्रत हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र माना गया है। यह न केवल भगवान विष्णु की उपासना का दिन है, बल्कि देवी एकादशी के प्राकट्य का उत्सव भी है। मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि को यह व्रत किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इसी दिन भगवान विष्णु की योगमाया शक्ति से देवी एकादशी का जन्म हुआ था, जिन्होंने असुर मुर नामक राक्षस का संहार किया था। यही कारण है कि इसे देवी एकादशी जन्मोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। पौराणिक मान्यता है कि उत्पन्ना एकादशी से ही वर्षभर की सभी एकादशियों की परंपरा प्रारंभ हुई। इस व्रत के पालन से भक्तों को न केवल पापों से मुक्ति मिलती है, बल्कि मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

एक ही मंदिर में सारे देवी-देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा क्यों

पहले के समय में आपने देखा होगा कि शहर में हनुमान जी का मंदिर, मां काली का, मां दुर्गा का मंदिर, भैरव का मंदिर, भगवान शिव का, भगवान विष्णु लक्ष्मी का आदि देवी-देवताओं के नाम पर मंदिरों की पहचान हुआ करती थी और आदमी अपनी श्रद्धा के अनुसार अपना ईष्ट, अपना देवता और अपनी देवी की पूजा करता था, एक मंदिर में एक ही देवता अधिक से अधिक दो देवताओं की स्थापना होती थी। वर्तमान समय में एक मंदिर में सारे देवी -देवताओं का निवास और प्राण प्रतिष्ठा की जाने लगी, जिसके कारण कई बार साधक भटक जाता है कि किसकी पूजा करें और किसकी न करें, किसका भोग लगाएं और किसका न लगाएं? क्या पता कौन सा देवता नाराज हो जाए, इस डर के कारण वह एक ही भोग सारे देवताओं को लगता फिरता है ताकि उसकी साधना उसकी आराधना से सभी देवी देवता प्रसन्न हो जाएं और उसको उसके परिवार को तरक्की उन्नति खुशहाली का आशीर्वाद दें। एक बार पूजा करने बैठता है, तो सारे देवी-देवताओं कि माला फेरता है और आरती गाता है, फिर भी इस दुविधा में रहता है कि पता नहीं कि उसकी प्रार्थना स्वीकार हुई या नहीं? अंत में इसका परिणाम यह निकलता है कि कई बार उसे अपनी पूजा में, अपनी साधना में, सफलता नहीं मिलती और धीरे-धीरे इस स्थिति में उसका अपने भगवान के ऊपर से, देवी-देवताओं के ऊपर से, विश्वास उठने लगता है।

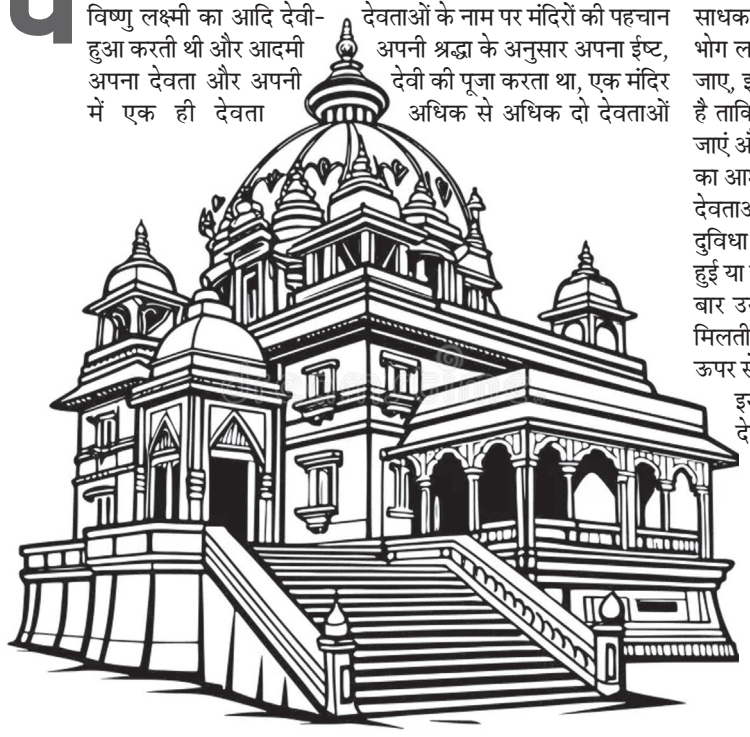

अनिल सुधांशु
ज्योतिषाचार्य

इसका मुख्य कारण यह है कि उसे किसी भी एक देवी-देवता पर विश्वास नहीं है, कभी इसको पूजता है, कभी उसको पूजता है, कभी इसको प्रसाद चढ़ाता है, कभी उसको प्रसाद चढ़ाता है, कभी किसी देवता को अपना ईष्ट बनाता है, कभी उसे अपना आराध्य बनाता है और कई बार इतना भ्रमित हो जाता है कि उसे न तो अपनी पूजा पर भरोसा रहता न ईश्वर की शक्ति पर? आपने हमेशा से देखा होगा, बड़े-बड़े साधकों को पढ़ा और सुना होगा, उन्होंने एक देवी या देवता की साधना करके पर ब्रह्म परमात्मा को प्राप्त कर लिया, उदाहरण के तौर पर महाकवि वाल्मीकि, जिन्होंने मरा-मरा जपकर पूर्ण ब्रह्म को प्राप्त कर लिया। हनुमान जी ने राम-राम जप कर साक्षात राम को पा लिया, नीम करोली बाबा ने हनुमान जी की साधना करके उनकी शक्ति प्राप्त कर ली, परमहंस जी महाराज ने महाकाली की सेवा करके साक्षात उनका साक्षात्कार किया।

सुदामा ने और मीरा ने कृष्णा-कृष्णा कृष्ण को पा लिया। ऐसे उदाहरणों से वेद और पुराण भरे पड़े हैं। इसलिए मेरा आप सभी भक्तों से अनुरोध है कि एक देवता, एक देवी या एक ईश्वर की आराधना करें, क्योंकि ईश्वर एक ही है, उसके रूप अनेक हैं, आपको जिसके प्रति श्रद्धा और विश्वास महसूस हो, उसी को अपना ईष्ट अपना आराध्य बना लीजिए और मन-क्रम-वचन और पूर्ण-श्रद्धा-विश्वास के साथ उनकी साधना कीजिए, निश्चित रूप से जीवन में सफलता के द्वार खुल जाएंगे, जीवन से सारे कष्ट-क्लेश खत्म हो जाएंगे, तरक्की और उन्नति के रास्ते खुल जाएंगे, संसार के सभी भौतिक सुखों और भोगों के साथ-साथ मोक्ष भी प्राप्त होगा। एक ईष्ट, एक गुरु, एक तंत्र, एक मंत्र, एक यंत्र की पद्धति पर चलिए, यदि आप ऐसा नहीं करते हैं और बार-बार उपरोक्त चीजों को बदलते हैं, तो जीवन में कभी भी आपको सफलता नहीं मिल सकती। आपकी तरक्की उन्नति नहीं होगी, दुर्भाग्य और असफलता, कभी आपका पीछा नहीं छोड़ेगी और आप भ्रम कि इस स्थिति में, यह नहीं जान पाएंगे कि क्या सही है और क्या गलत है? इसलिए अपनी श्रद्धा और विश्वास, एक देवी, एक देवता, एक ईश्वर, एक गुरु, एक तंत्र, एक मंत्र, एक यंत्र पर पूर्ण रूप से पूरी दृढ़ता के साथ विश्वास रखिए और मन में सोचिए कि एक ही की साधना आपको परमात्मा का एकाकर करा देगी, यही अध्यात्म का सच्चा मार्ग है।